vinetur

ब्रिटिश अध्ययन में बीयर और स्पिरिट्स का संबंध वाइन की तुलना में तीव्र गुर्दा क्षति के अधिक जोखिम से

14 वर्षों तक निगरानी में रखे गए ब्रिटेन के 250,791 वयस्कों में सबसे अधिक स्पिरिट्स पीने वालों में तीव्र गुर्दा क्षति का जोखिम 25.5% अधिक पाया गया

बुधवार, 18 नवंबर 2026



ब्रिटेन में 250,000 से अधिक वयस्कों पर औसतन 14 वर्षों तक किए गए एक बड़े अध्ययन में बीयर और स्पिरिट्स के अधिक सेवन को तीव्र गुर्दा क्षति के अधिक जोखिम से जोड़ा गया, जबकि वाइन के सेवन के लिए ऐसा सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध नहीं मिला। Anglia Ruskin University के शोध पर आधारित यह अध्ययन Scientific Reports में प्रकाशित हुआ है।

अध्ययन में UK Biobank के 250,791 ऐसे लोगों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया जो उस समय शराब पीते थे। इसमें तीव्र गुर्दा क्षति (AKI) के 10,335 मामले सामने आए। यह एक गंभीर स्थिति है, जिसमें गुर्दे अचानक ठीक से काम करना बंद कर देते हैं। AKI से दीर्घकालिक गुर्दा रोग और गुर्दे की विफलता हो सकती है, साथ ही कम उम्र में मृत्यु का जोखिम भी बढ़ सकता है।

शोधकर्ताओं ने बताया कि स्पिरिट्स और बीयर का अधिक सेवन AKI के बढ़े हुए जोखिम से जुड़ा था, और यह संबंध

यकृत रोग तथा स्वास्थ्य और जीवनशैली से जुड़े कई अन्य कारकों का हिसाब रखने के बाद भी बना रहा। ये निष्कर्ष इस धारणा को चुनौती देते हैं कि शराब से होने वाली गुर्दे की क्षति मुख्य रूप से केवल यकृत को हुए नुकसान के जरिए होती है। इनसे यह संकेत भी मिलता है कि कुछ पेय सीधे गुर्दों को नुकसान पहुंचाने से जुड़े हो सकते हैं, हालांकि अध्ययन कारण-परिणाम का प्रमाण नहीं देता।

शोधकर्ताओं ने बीयर, वाइन और स्पिरिट्स पीने वालों को सेवन के आधार पर तीन समूहों में बांटा और सबसे कम सेवन वाले समूह की तुलना बाकी दो समूहों से की। स्पिरिट्स पीने वालों में संदर्भ समूह का औसत सेवन प्रति सप्ताह 1.22 ब्रिटिश अल्कोहल यूनिट था। औसतन प्रति सप्ताह 2.69 यूनिट स्पिरिट्स पीने वालों में AKI होने की आशंका 8.1% अधिक थी, जबकि प्रति सप्ताह औसतन 8.73 यूनिट पीने वालों में जोखिम 25.5% अधिक था।

बीयर पीने वालों में संदर्भ समूह का औसत सेवन प्रति सप्ताह 2.67 यूनिट था। अध्ययन के अनुसार, प्रति सप्ताह 6.81 यूनिट पीने वालों में AKI का जोखिम 5.7% अधिक था, जबकि औसतन प्रति सप्ताह 23.6 यूनिट पीने वालों में यह जोखिम 14.8% अधिक था।

शोधकर्ताओं को AKI के जोखिम और रेड या व्हाइट वाइन के सेवन के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध नहीं मिला। लेकिन इस अध्ययन में ऐसा संबंध न मिलने का अर्थ यह नहीं है कि वाइन गुर्दों की रक्षा करती है। चूंकि यह अवलोकन-आधारित शोध था, इसलिए यह बड़ी आबादी में केवल संबंध दिखा सकता है ; यह साबित नहीं कर सकता कि किसी खास तरह का मादक पेय सीधे गुर्दे की क्षति का कारण बनता है या उससे बचाता है।

प्रमुख लेखक और Anglia Ruskin University में हृदय-रक्तवाहिका महामारी विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर Rudolph Schutte ने कहा कि ये नतीजे पहले के प्रयोगशाला अनुसंधान से मिले उन संकेतों के समर्थन में आबादी-स्तर के प्रमाण देते हैं कि शराब सीधे गुर्दों को प्रभावित कर सकती है। उन्होंने कहा कि आंकड़े बताते हैं कि बीयर और स्पिरिट्स सूजन से जुड़ी प्रक्रियाओं के जरिए गुर्दों को नुकसान पहुंचा सकते हैं, हालांकि इस तंत्र की पुष्टि के लिए और अध्ययन जरूरी होंगे।

यह शोध पेय उद्योग का ध्यान खींच सकता है, क्योंकि यह इस बात के प्रमाण बढ़ाता है कि वाइन, बीयर और स्पिरिट्स से जुड़े स्वास्थ्य जोखिम एक जैसे नहीं हो सकते। इससे उत्पादकों, खुदरा विक्रेताओं और नीति-निर्माताओं पर यह दबाव भी बढ़ सकता है कि शराब और स्वास्थ्य पर चर्चा करते समय अवलोकन-आधारित संबंधों और प्रमाणित कारणात्मक प्रभावों के बीच फर्क स्पष्ट करें—खासकर उपभोक्ताओं को दी जाने वाली जानकारी और सार्वजनिक बहस में।

यह अध्ययन UK Biobank में दर्ज शराब सेवन की प्रतिभागियों द्वारा दी गई जानकारी पर आधारित था और शोधकर्ताओं ने लगभग डेढ़ दशक तक उन पर नजर रखी। कई अन्य कारकों के लिए सांख्यिकीय समायोजन के बावजूद, इस तरह के अध्ययनों पर खानपान, आय, चिकित्सा इतिहास और पीने की आदतों में ऐसे अंतर असर डाल सकते हैं जिन्हें पूरी तरह मापना मुश्किल है। फिर भी, नमूने का बड़ा आकार और लंबी निगरानी इसे इस बात की पड़ताल करने वाले बड़े संभावित अध्ययनों में शामिल करते हैं कि शराब के अलग-अलग प्रकार तीव्र गुर्दा क्षति से किस तरह जुड़े हो सकते हैं।